उद्‌भावना

जन भावनाओं का साझा मंच

अंक : 154 मूल्य : 50 रुपये

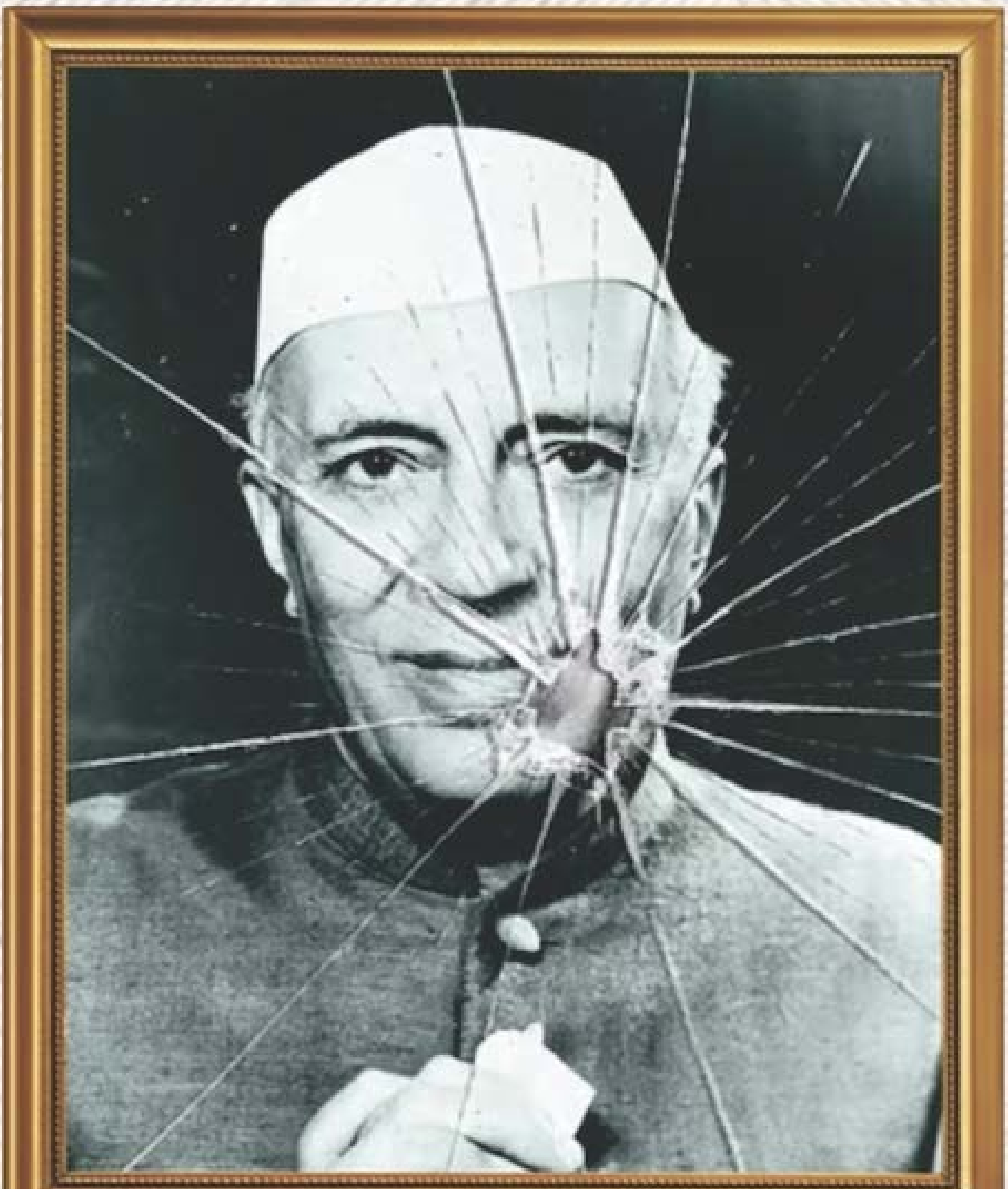

गालियाँ खा के बेमज़ा न हुआ

उद्भावना

वर्ष : 38 अंक : 154

जनवरी - मार्च 2024

अप्रैल 2024 में प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ. राजकुमार शर्मा,
राजेश जोशी, रामप्रकाश त्रिपाठी

संपादक मंडल

अजेय कुमार (संपादक)
हरियश राय (उप संपादक)
मुशर्रफ अली
विनीत तिवारी

सहयोग

रामपाल कटवालया

चित्र

पंकज कुमार, राजीव गांधी फाउंडेशन न.दि.

संपादकीय पता

एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद

पत्राचार का पता

ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरिया,
जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095
मो. 9811582902
E-mail : pd.press@gmail.com

आवरण चित्र : आउटलुक से साभार

सहयोग राशि

यह अंक	:	50 रु.
वार्षिक	:	300 रु.
संस्थानों से वार्षिक	:	500 रु.
आजीवन (व्यक्ति)	:	3000 रु.
आजीवन (संस्थानों के लिए)	:	5000 रु.

सभी मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **'उद्भावना'** के नाम से पत्राचार के पते पर ही भेजें. जो पाठक हमारे अकाउंट में सीधे जमा करना चाहते हैं, वे कृपया निम्न सूचना देखें

अकाउंट	: UDBHAVANA
अकाउंट न.	: 90261010002100
बैंक	: Canara Bank
ब्रांच	: राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060
IFSC	: CNRB0019026

आजीवन सदस्यों को अब तक छपे सभी उपलब्ध महत्त्वपूर्ण विशेषांक भेंट स्वरूप दिए जाएंगे

पत्रिका में छपे विचार लेखकों/लेखिकाओं के अपने हैं, उनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

दस्तावेज

जवाहरलाल नेहरू न होते तो भारत कैसा होता?	**राजेन्द्र माथुर**	5
मेरी नज़र में नेहरू	**सज्जाद ज़हीर**	9
नेहरू ज़िंदा हैं	**ख़्वाजा अहमद अब्बास**	11
नेहरू को श्रद्धांजलि	**अटल बिहारी वाजपेयी**	13
गोलवलकर और नेहरू आमने-सामने	**रामचंद्र गुहा**	54
जिन्ना नेहरू संवाद		56
वैज्ञानिक मानसिकता		69

नेहरू के विचारों की दुनिया

1. जिस गांव में किसी को चमार कहते हैं वह गांव आज़ाद नहीं है-14/ आज़ादी की सालगिरह कोई तमाशा नहीं-14 /अगर आपस में फूट है तो आज़ादी नहीं है-15/भारत माता की जय-16/ 'जन गण मन क्यों' और 'वंदे मातरम' क्यों नहीं-16/ सांप्रदायिक आदमी का दिमाग कुंद होता है-17/ धर्म क्या है?-17/ हिन्दू धर्म क्या है?-18/ राष्ट्रवाद-19/ राष्ट्र-भाषा का प्रश्न-20/ प्रेस की स्वतंत्रता-22/ लेनिन -23

साहित्य के बारे में नेहरू

हमारा साहित्य-26, साहित्य की बुनियाद-29, शब्दों का अर्थ- 29, मैं कब पढ़ता हूं?-31

साहित्यकारों की नज़र में नेहरू

नेहरू	**जोश मलीहाबादी**	34
नेहरू और निराला	**रामचंद्र गुहा**	38
दून घाटी में नेहरू	**मुक्तिबोध**	40
अदीबों की नज़र में नेहरू	**ज़ाहिद ख़ान**	41
बंदी जीवन, अज्ञेय और नेहरू	**ओम थानवी**	45
नज़्में	**साहिर लुधियानवी, कैफ़ी आज़मी**	49

आलेख

संघ गिरोह को नेहरू से इतनी परेशानी क्यों है?	**अशोक कुमार पाण्डेय**	50
सत्य-निष्ठा का व्यक्तित्व	**प्रभात पटनायक**	60
नेहरू को 'विज्ञान के मित्र' के रूप में याद करते हुए	**शाह आलम खान**	67
'नेहरू जी राजनीति में संत, कवि और दृष्टा थे'	**सूरज पालीवाल**	74
नेताजी बोस या नेहरू?	**अपूर्वानंद**	79
नेहरू की धरोहर और उनके चिंतन का क्षितिज	**सुरेश शर्मा**	81
हिंदी सिनेमा का नेहरू युग	**जवरीमल्ल पारख**	84

कविताएँ

पंकज चतुर्वेदी-62, राकेश रेणु -64, सत्येंद्र कुमार -66

कहानियां

मायापुर बजरिया में सब कुछ बिकानी...**जनार्दन**-95 गुड, बेटर एंड बेस्ट- **मुकुल जोशी**-99

खेल

बीसीसीआई की सख्ती	**मनोज चतुर्वेदी**	102

पुस्तक समीक्षा

माटी-राग-**प्रियदर्शन**-104 / चयनित कविताएं-**आशीष दशोत्तर**-107 / छोटे मुंह छोटी सी बात-**श्रवण कुमार उर्मलिया**-109 / अंजोर-**रामदुलारी शर्मा**-111

फिल्म समीक्षा

स्वातंत्र्यवीर सावरकर-**राम पुनियानी**-112 / 'देजा वु' - **निधिश जे विलाट**-114

सांस्कृतिक कार्यक्रम

मन्नू भंडारी के लेखन पर चर्चा और नाटक-**अदिति राजपूत**-117/ आठवाँ नंद चतुर्वेदी स्मारक व्याख्यान -**सुयश चतुर्वेदी**-118/गोरी हिरणी-उपन्यास पर परिचर्चा-**प्रो. राजीव चंद्र शर्मा**-120

अपनी बात-2

पूछते हैं वो कि 'नेहरू' कौन है

जवाहरलाल नेहरू को गुज़रे 60 बरस हो गए, परंतु वे आज भी लोकसभा में जमकर बैठे हैं। उनका भूत मोदी जी को काम नहीं करने दे रहा। वे उन्हें लाख गालियां दे लें परन्तु कहीं न कहीं उनकी आत्मा उन्हें कचोट रही है, जैसे एक आवारा नालायक लड़का अपनी मां का सोना–चांदी चुरा कर बाज़ार बेचने जाता है तो कम से कम एक बार उसकी मां की आवाज़ उसे सुनाई पड़ती है कि ''बेटा यह न कर। यह मेरे ब्याह के समय तेरे नाना ने मुझे दिये थे''। आज अदानियों–अंबानियों को देश बेचा जा रहा है तो उसके निर्माता नेहरू को रास्ते से हटाना उनकी मज़बूरी है। नेहरू को भारत का वास्तुकार कहा जाता है और इसमें कोई शक नहीं कि इस आधुनिक भारत की अर्थव्यवस्था की नींव नेहरू ने रखी। जब हमारे सर्वोच्च नेता साम्राज्यवादियों विशेषकर बाइडन, ट्रंप, सुनाक, मैंक्रों इत्यादि के गले मिलते हैं तो कहा जाता है कि मोदी ने विश्व–राजनीति में भारत की छवि को चमकाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ऐसे में नेहरू का याद आना स्वाभाविक है जिन्होंने 120 देशों को गुटनिरपेक्ष आंदोलन के मंच पर ला खड़ा किया और साम्राज्यवादियों के विरुद्ध एक विश्व–व्यापी आंदोलन की शुरुआत की। आज इन अल्प–विकसित और विकासशील देशों को आई.एम.एफ–विश्वबैंक के रहमोकरम पर छोड़ दिया गया है।

17 फरवरी 1953 को नेहरू ने राष्ट्रपति के अभिभाषण बहस का जवाब देते हुए आगाह किया था कि यू. एन ओ जैसी महत्वपूर्ण संस्था पर भी निगाह रखना ज़रूरी है। कहीं ऐसा न हो कि वह संस्था किसी सुपरपावर की मनमानी पर लगने वाली रबर स्टैंप बना दी जाए। आज गाज़ा में अस्पतालों पर बमबारी की जा रही है। नेहरू की चेतावनी याद आती है। मानवता के विरूद्ध हो रही इस बमबारी को रोकने वाला कोई नहीं है और जो बमबारी कर रहा है, मोदी जी उनके साथ फोटो खिंचवा रहे हैं। पूरी भाजपा इसराइल के साथ खड़ी है।

नेहरू को त्यागने की शुरूआत मोदी या भाजपा ने नहीं की। दरअसल नरसिम्हा राव ने ही यह शुरूआत कर दी थी। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में ही जब बाबरी मस्जिद गिराई जा रही थी वे मूक दर्शक बनकर तमाशा देखते रहे। तमाम नेहरूवादी आर्थिक नीतियों को तजने का काम नरसिम्हा राव ने ही कर दिया था। उन्हीं के शासनकाल में कांग्रेस के प्रमुख और सांसद शशि थरूर ने नेहरू पर लिखा था, ''अर्थनीति से लेकर विदेश नीति तक नेहरू सचाई से एकदम दूर अपनी ख्याली दुनिया में ही मगन रहते थे। (कौन है भारत माता? सं. पुरुषोत्तम अग्रवाल पृ. 41) उन्होंने अपने उपन्यास, दि ग्रेट इंडियन नावल (1989) में नेहरू की कल्पना

धृतराष्ट्र के रूप में की है, क्योंकि भविष्य के सपनों और आदर्शों में डूबे हुए नेहरू आसपास की सचाइयों से कतई बेखबर थे'' (वही) तो नेहरू के निंदक केवल भाजपा में हैं कहना गलत होगा। नेहरू के बारे में इतनी गाली–गलौच हो रही है लेकिन कांग्रेस की तरफ से उसके विरोध में छुटपुट टिप्पणियों के अलावा एक भी व्यवस्थित बयान नहीं आया।

कम्युनिस्टों के पास नेहरू विरोध के अपने तर्क थे। और यह अकारण नहीं था कि कम्युनिस्ट उनसे नाराज रहे। 1959 में देश की पहली कम्युनिस्ट सरकार जिसमें ई एम.एस नंबूदिरिपाद मुख्यमंत्री थे, नेहरू ने बेवजह बर्खास्त की। 1950–51 में जब कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में तेलगांना में पहली बार खेतमज़दूरों ने निज़ाम के विरुद्ध हथियार उठाए थे, और लगभग 6 माह तक ज़मींदारों से छीनी ज़मीन गरीबों, (जिनमें 80 प्रतिशत से अधिक दलित थे) में बांटी और जीवन में पहली बार उन्हें दो वक्त की रोटी नसीब हुई, उस समय हमारे 'समाजवादी' नेहरू ने सेना भेजकर कई कम्युनिस्ट कार्यकताओं को सूली पे चढ़ाया और 50,000 से अधिक कार्यकताओं को जेल में ठूंसा। हर पंचवर्षीय योजना में भूमिसुधार करने का वादा कांग्रेस करती रही परन्तु जमींदारों की जर्बदस्त लॉबी के कारण यह हो न पाया। जीतकर आए कांग्रेसी सांसदों में 80 प्रतिशत बड़े ज़मींदार थे। भूमि सुधार कोई समाजवादी कार्यक्रम नहीं था, बड़ी संख्या में गरीबों की क्रय शक्ति बढ़ाने की ज़रुरत थी ताकि औद्योगिक उत्पादन की खपत हो सके। नेहरू के काल में अमरीकी अंबैसेडर चेस्टर बाउल्स ने भूमि सुधारों के पक्ष में कैम्पेन किया। सत्ता संसद में बहुमत लाने से मिलती है, कांग्रेस ने भी आज की भाजपा की तरह तमाम हथकण्डे (राम को छोड़कर) अपनाए और उसका चरित्र बदलता चला गया। नेहरू के होते हुए ही यह सब धोखाधड़ी चालू हो गई थी। मुक्तिबोध ने जब ''अंधेरे में'' कविता लिखी तो उसकी पृष्ठभूमि में यही नेहरू युग था। नागार्जुन, निराला जैसे कई कवियों ने नेहरू पर अपनी कविताओं में तंज कसे।

दरअसल नेहरू उतने समाजवादी नहीं थे कि उन्हें समाजवादी कहा जाए, उसके साथ–साथ वे उतने मार्कट फ्रेंडली नहीं थे कि उन्हें पूंजीवाद का समर्थक कहा जाए। परन्तु सब जानते हैं कि पूंजीपतियों की सरकार में आपका व्यक्तिगत चरित्र उतना मैटर नहीं करता। अगर ज्योतिबसु देश के प्रधानमंत्री बना दिये जाते तो भी वे देश में समाजवाद न ला पाते। इसलिए तहे दिल से नेहरू की भूरि–भूरि प्रशंसा करने में एक संकोच बना रहता है। लेकिन यह भी सच है कि एक बुर्जुआ नेता होते हुए भी शायद वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने रूसी क्रांति के बाद मार्क्सवाद–लेनिनवाद का बाकायदा अध्ययन किया। वे 1926–27 में सोवियत संघ गए और वहां से आने के बाद वैज्ञानिक समाजवाद को अपनी तमाम सीमाओं के भीतर देश में लागू करने का प्रयास किया। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हमारा भारत आज जैसा भी है, उसमें नेहरू का अपना पूरा योगदान है। नेहरू का इतना असर था कि बहुत से कम्युनिस्ट और वामपंथी नेता उन दिनों इस बहस में उलझ गए कि उन्हें कांग्रेस में बने रहना चाहिए या नहीं। पी.सी. जोशी, जो तब संयुक्त कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव थे, ने तो पार्टी का एक पर्चा निकाला जिसका शीर्षक था ''हम नेहरू सरकार की रक्षा करेंगे।'' सी पी आई का सी पी एम के साथ झगड़े का मुख्य कारण यही तो था कि सी पी आई कांग्रेस को ''राष्ट्रीय बुर्जुआ'' पार्टी मानती थी, जबकि सी.पी.एम इस समझ के खिलाफ थी। कांग्रेस में नेहरू जैसे व्यक्ति के होने ने दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच इस दरार को और चौड़ा किया।

नेहरू ने समाजवादी देशों से अच्छे संबंध बनाकर रखे। समाजवादी देशों से सहायता का एक पहलू यह भी रहा कि भारत पश्चिमी यूरोपीय देशों से सोदेबाज़ी करने की स्थिति में रहा और यह नेहरू की देन है कि आज भी हमारा पलड़ा भारी है। आज जब हम अपने पड़ोसी देशों को देखते हैं तो अपने आप को भाग्यशाली समझते हैं कि उनकी तरह हम पूरी तरह साम्राज्यवादी देशों की गोद में नहीं जा गिरे। हमारे देश का एक स्वतंत्र औद्योगिक आधार है, यह नेहरू के कारण है।

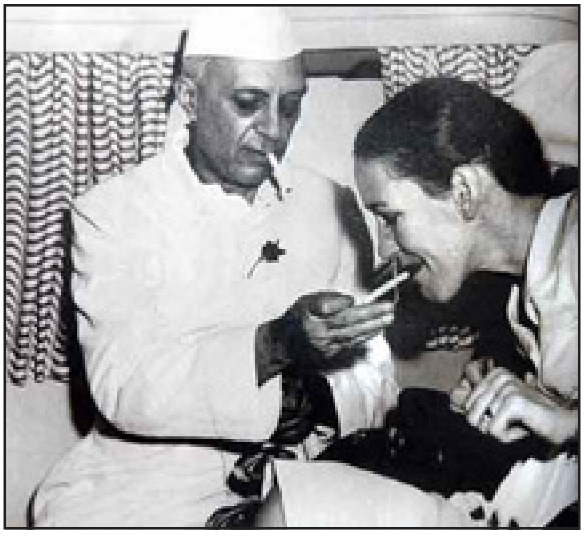

नेहरू की एक रईसज़ादे की छवि गढ़ने में जनसंघ और आर.एस.एस. ने बहुत दुष्प्रचार किया। मैं जब दसवीं कक्षा में पढ़ता था तभी से मुझे यह सुनने को मिला कि नेहरू जी के कपड़े पेरिस से धुलकर आते थे। और यह भी कि नेहरू के माउंटबैंटन की बीवी एडविना के साथ नाजायज़ संबंध थे। एडविना की पुत्री पामेला ने अपनी पुस्तक में इन अफवाहों का खंडन किया है और नेहरू–एडविना की दोस्ती को 'म्यूचुअल रेस्पेक्ट'' पर आधारित बतलाया है। व्यक्तिगत तौर पर मुझे उनकी इस फोटो में कुछ भी आब्जेक्शनेबल नहीं लगता जिसे प्रमाण के तौर पर संघी पत्र–पत्रिकाओं में धड़ल्ले से छापा गया। वे अगर श्रीमान माउंटबैटन की सिगरेट जला रहे होते तो शायद किसी को कोई आपत्ति न होती।

अब मैं उस प्रश्न पर आता हूं जो प्रायः लोगों के मन में उठता है कि क्या कारण है, मोदी एंड कंपनी को गांधी जी से परहेज़ नहीं,

नेहरू से है जबकि उनके पूर्वजों ने गांधी जी की हत्या की थी। अचानक ये लोग गांधी जी के चश्मे का उपयोग करने लगे। एक संघी नेता ने तो यहां तक बयान दे डाला कि ''हमसे गलती हो गई जो गांधी जी की हत्या कर दी, दरअसल हमें नेहरू को मारना चाहिए था।''

यह सच है कि गांधी जी संत थे, हिंदू–मुस्लिम भाईचारा चाहते थे जिसके लिए उन्होंने अपनी जान भी गंवाई। गांधीजी का मन इस बात से खिन्न था कि आजादी के लिए उन्होंने जिस अंहिसा का पाठ पढ़ाया, इसका कोई असर जनता के मन–मस्तिष्क पर नहीं पड़ा। आजादी मिलने से एक वर्ष पहले ही जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग ने हिंसा की शुरूआत कर दी! कलकत्ते में भयानक दंगे करवाए जिसके जवाब में बिहार में स्थानीय कांग्रेसी नेताओं ने बड़े पैमाने पर हिंसा की। रामचंद्र गुहा ने लिखा है ''जब ग्रामीण बंगाल से हिंसा की पहली खबर आई, तो वह 77 बरस का वृद्ध, कीचड़ और चट्टानों से भरे कठिन इलाकों में हिंदुओं को सांत्वना देता फिर रहा था, जिन्हें हिंसा की विकरालता को झेलना पड़ा था। अपने सात सप्ताहों की यात्रा के दौरान गांधीजी ने 116 मील की यात्रा की, जिसमें ज्यादातर वे पैदल चले। उन्होंने करीब सौ जगह गांव वालों को संबोधित किया। उसके बाद उन्होंने बिहार की यात्रा की जहां मुसलमान मुख्य रूप से हिंसा का शिकार हुए थे। फिर वे दिल्ली पहुंचे, जहां पंजाब से बड़ी तादाद में हिंदू और सिख शरणार्थी आए हुए थे। उन शरणार्थियों का उस नरसंहार में सब कुछ लुट चुका था। वे बदले की आग में जल रहे थे, जिसे गांधी ने शांत करने की कोशिश की थी।''

(*भारत गांधी के बाद*, रामचंद्र गुहा पृ.11)

अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद गांधी जी हिंदू– मुस्लिम एकता स्थापित करने में नाकामयाब रहे। वे आरएसएस और उसके नेता गोलवलकर की मंशाओं से अनभिज्ञ बने रहे। एक बार तो उन्होंने आरएसएस के शिविर में जाकर शांति बनाये रखने में उनकी सहायता मांगी। उन्होंने वहां कहा, ''अगर आप सोचते हैं कि हिंदुस्तान में गैर हिंदुओं खासकर मुसलमानों को रहने का कोई हक नहीं है और अगर मुसलमानों को यहां रहना है तो उन्हें हिंदुओं का गुलाम बनकर रहना होगा तो आप हिंदू धर्म का नुकसान कर रहे हैं।'' परन्तु गांधी जी ने कभी भी सांप्रदायिक उन्माद भड़काने के लिए सीधे सीधे आरएसएस का नाम नहीं लिया। वे उसके जहरीले प्रचार की तह तक न पहुंच सके। संत प्रवृत्ति गांधी जी अपने को 'सनातनी हिंदू' कहते थे और मेरा मानना है कि अगर उस वक्त नेहरू राजनीतिक मंच पर उपस्थित न होते तो यह देश 1947 में 'हिंदू राष्ट्र' बन गया होता। उस वक्त पड़ोस में धर्म के आधार पर एक राष्ट्र का जन्म हो चुका था और इस विचार को कॉमन सेंस का हिस्सा माना जा रहा था कि एक 'मुस्लिम राष्ट्र' बनने के बाद यह स्वाभाविक है कि दूसरा हिंदू राष्ट्र बन जाए।

यहां नेहरू ने सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभाई। नेहरू की अपनी सोच में वे आरएसएस को महज एक सांप्रदायिक संगठन नहीं मानते थे। गांधी जी से अलग वे गोलवलकर की मंशाओं से पूरी तरह वाकिफ थे। नेहरू की अपनी सोच 'सनातनी हिंदू' वाली न होकर 'हिंदू बाई एक्सीडेंट' वाली थी। धर्म और विशेषकर हिंदू धर्म के बारे में उनका नज़रिया वैज्ञानिक था। मार्क्सवाद से प्रभावित होने के कारण वे लगभग नास्तिक थे और धर्म आधारित राष्ट्र की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। इसलिए जब गोलवलकर ने हिंदू राष्ट्र का आह्वान किया और बंबई के शिवाजी पार्क में एक लाख लोगों की सभा को संबोधित किया तो नेहरू ने उसी स्थान पर 6 लाख लोगों की भीड़ से एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के निर्माण की अपील की। यह भाषण उन्होंने आजादी मिलने के लगभग 2 वर्ष बाद दिया था जब पूरा देश विभाजन की त्रासदी झेल चुका था, जब हिंदू मुसलमान विद्वेष चरम पर था, पूरा माहौल हिंदू राष्ट्र बनने के अनुकूल था, आरएसएस को तो छोड़िए, खुद कांग्रेस में एक धड़ा हिंदू लहर की चपेट में था, तब जिस एक व्यक्ति ने अपनी पूरी ताकत लगाकर इस देश को 'हिंदू राष्ट्र' बनने से रोका, वे थे जवाहरलाल नेहरू। देश भर में उन्होंने 350 से अधिक जनसभाएं कीं। उस वक्त यातायात की सुविधाएं उतनी उपलब्ध नहीं थीं। धूल से भरी सड़कों पर पैदल चलते हुए, कभी बसों में तो कभी ट्रेक्टरों में बैठकर नेहरू जी इन जनसभाओं को संबोधित करने पहुंचते थे और उनका केवल एक एजेंडा होता था, ''एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र हिंदू राष्ट्र से क्यों बेहतर है?''। नेहरू जी उन दिनों युवा नहीं थे, 60 की आयु पार कर चुके थे। भारत जैसे अविकसित देश में उन दिनों की यात्राओं में उन्होंने जो कष्ट झेले होंगे, उनकी कल्पना करना भी आज मुश्किल है। यहां केवल भौतिक सुविधाओं का ही प्रश्न नहीं था। 'मानवता के महासागर' भारत, जिसमें अलग–अलग धर्मों, भाषाओं, क्षेत्रीय विविधताओं से भरपूर लोग रहते थे, उनसे कम्युनिकेट कर पाने की अपनी चुनौतियां थीं। नेहरू की समाजवादी शिक्षा और सोवियत संघ के निर्माण के उनके सूक्ष्म अध्ययन ने उन्हें भारत को एकजुट करने में अहम भूमिका निभाई। हिंदूराष्ट्र के बरक्स एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र की अवधारणा को वे आम भारतवासियों के दिलों तक ले जाने में सफल रहे। आज जब मोदी जी उपवास रखकर बाबरी मस्जिद की कब्र पर बने राममंदिर में दंडवत प्रणाम करते हैं और खुले आम हिंदू राष्ट्र की वकालत करते हैं तो नेहरू याद आते हैं।

यह अंक नेहरू को समर्पित है और आपके हाथों में है। अपनी प्रतिक्रिया देंगे।

आपका

अजेय कुमार

24 अप्रैल 2024